(3) पुरुष का स्वरूप, अस्तित्व और बहुलता के लिए युक्तियाँ —

→ सांख्य द्वारा अभिमत दूसरा स्वतंत्र तत्व पुरुष है।

→ भारतीय दर्शन में जिसे आत्मा या चेतन सत्ता कहा गया है उसे ही सांख्य दर्शन में पुरुष कहा गया है।

| पुरुष | अंतर | प्रकृति |
|---|---|---|
| पुरुष चेतन | | प्रकृति अचेतन |
| पुरुष त्रिगुणातीत | | प्रकृति त्रिगुणात्मक |
| पुरुष ज्ञाता | | प्रकृति ज्ञान का विषय |
| पुरुष निष्क्रिय | | प्रकृति सक्रिय |
| पुरुष अनेक | | प्रकृति एक |
| पुरुष कार्यकारण से मुक्त | | प्रकृति कारण |
| पुरुष अपरिवर्तनशील | | प्रकृति परिवर्तनशील |
| पुरुष विवेकी | | प्रकृति अविवेकी |
| पुरुष अपरिणामी नित्य | | प्रकृति परिणामी नित्य |

→ पुरुष चैतन्यस्वरूप है, चैतन्य उसका स्वभाव है।
पुरुष परम विशुद्ध परात्पर चैतन्य है। आत्मतत्व है।
पुरुष पारमार्थिक ज्ञाता या द्रष्टा है।
पुरुष स्वतःसिद्ध और स्वप्रकाश है।

* पुरुष के अस्तित्व के प्रमाण —

→ पुरुष के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ईश्वरकृष्ण के सांख्यकारिका का श्लोक संख्या 17 प्रस्तुत है —

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥ 17

* पुरुष बहुत्व के लिए युक्तियाँ —

→ सांख्य के अनुसार पुरुष की संख्या अनेक है।
जितने जीव हैं उतनी ही आत्माएँ हैं।
→ सभी आत्माओं का स्वरूप चैतन्य है।
→ गुण की दृष्टि से सभी आत्माएँ समान हैं, परिणाम की दृष्टि से वे भिन्न-भिन्न हैं।

* पुरुष/आत्मा की अनेकता के समर्थक -
सांख्य
योग
जैन
मीमांसा

→ पुरुष की अनेकता को प्रमाणित करने के लिए ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका का श्लोक संख्या 18 प्रस्तुत करते हैं —

जनन-मरण-करणानां प्रतिनियमादयुगपत् प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ॥ 18

अर्थात -
1. व्यक्तियों के जन्म-मरण में विभिन्नता
2. संसार के व्यक्तियों की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में विभिन्नता
3. व्यक्तियों के कार्य-कलापों में विभिन्नता
4. व्यक्तियों में सत्व, रजस् और तमस् गुणों में भिन्नता
5. संसार के व्यक्तियों में विभिन्न कोटियों हैं

इन सभी आधार पर पुरुष की अनेकता प्रमाणित किया गया है।

* सांख्य के अनुसार पुरुष बन्धन और मोक्ष से असंपृक्त है। अन्तःकरणावच्छिन्न जीव का लिंग शरीर के रूप में बन्धन होता है और उसी का मोक्ष होता है। इस प्रकार —
→ प्रकृति ही बन्धती है और प्रकृति ही मुक्त होती है।
→ पुरुष का न तो बन्धन होता है, न वह जन्म मरण रूपी संसारचक्र में फंसता है और न वह मुक्त होता है।

(5) निरीश्वरवाद

→ सांख्य दर्शन जैन एवं बौद्ध एवं मीमांसा के समान अनीश्वरवादी दर्शन है।

→ बाद के सांख्य अनुयायियों में ईश्वर को लेकर दो मत हो जाते हैं —

→ सांख्य अनीश्वरवाद के समर्थकों में — वाचस्पति मिश्र
अनिरुद्ध

→ सांख्य ईश्वरवादी के समर्थकों में — विज्ञानभिक्षु

(6) कैवल्य / मोक्ष

→ भारतीय दर्शन के सामान्य परम्परा के अनुसरण में सांख्य भी मोक्ष / कैवल्य को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं।

→ सांसारिक जीवन त्रिविध दुःख से भरा है —

(i) आध्यात्मिक दुःख - मानसिक और शारीरिक व्याधियों Ex - क्रोध, भय, द्वेष, दर्द आदि

(ii) आधिभौतिक दुःख — बाह्य पदार्थों के प्रभाव से उत्पन्न होता है। Ex- एक्सीडेंट होना, अन्य दुर्घटना

(iii) आधिदैविक दुःख - बाह्य एवं अलौकिक कारणों से उत्पन्न होते हैं। Ex - भूत-प्रेत लगना,

* → त्रिविध दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति - मोक्ष / मुक्ति / अपवर्ग है।

→ मोक्ष की अवस्था में पुरुष — शुद्ध चित् की अवस्था में रहता है
सत् की " " "
* आनन्द नहीं होता ✗

→ मोक्ष का मार्ग — ज्ञान मार्ग (प्रकृति में पुरुष के भेद का ज्ञान)

→ सांख्य जीवन मुक्ति एवं विदेह मुक्ति दोनों को स्वीकारते हैं।